मैत्रावरुणर्वसिष्ठः।इन्द्रः। त्रिष्टुप्।

**उग्रो जज्ञे वीर्याय स्वधावाञ्चक्रिरपो नर्यो यत्करिष्यन्।**
**जग्मिर्युवा नृषदनमवोभिस्त्राता न इन्द्र एनसो महश्चित्॥ ७.०२०.०१**

उग्रः- उद्गूर्णः। जज्ञे- जातः। वीर्याय- पराक्रमाय। स्वधावान्- आत्मवान्। नर्यः- नरहितः। यत्। करिष्यन्- कुर्वन्नस्ति। तस्य। अपः- कर्मणः। चक्रिः- कर्तैव। नृषदनम्- मनुष्यसदनं प्रति। अवोभिः- रक्षाभिः। जग्मिः- गन्ता। युवा- तरुणः। त्राता- रक्षकः। इन्द्रः। नः- अस्मान्। महः- महतः। चित्- अपि। एनसः- अघात्। त्राता- रक्षकः॥१॥

**हन्ता वृत्रमिन्द्रः शूशुवानः प्रावीन्नु वीरो जरितारमूती।**
**कर्ता सुदासे अह वा उ लोकं दाता वसु मुहुरा दाशुषे भूत्॥ ७.०२०.०२**

वृत्रम्- आवरणस्य। हन्ता- नाशकः। इन्द्रः- परमेश्वरः। शूशुवानः- वर्धमानः। वीरः। जरितारम्- स्तोतारम्। ऊती- रक्षया। नु- क्षिप्रम्। प्रावीत्- प्रारक्षत्। सुदासे- शोभनदानाय। लोकम्- अनुभवस्य। लोक्यतेनेनेति लोकः। कर्ता। मुहुः- भूयो भूयः। दाशुषे- दात्रे। वसु- सम्पदाम्। दाता। भूत्- भवति॥२॥

**युध्मो अनर्वा खजकृत्समद्वा शूरः सत्राषाजनुषेमषाळ्हः।**
**व्यास इन्द्रः पृतनाः स्वोजा अधा विश्वं शत्रूयन्तं जघान॥ ७.०२०.०३**

युध्मः- योद्धा। अनर्वा- अभिगन्तृरहितः। खजकृत् समत्- समरकृत्। शूरः- समर्थः। सत्राषाट्- बहूनामभिभविता। जनुषा- जन्मना। अषाळ्हः- असह्यः। इन्द्रः। स्वोजाः- शोभनबलः। पृतनाः- शत्रुसेनाः। व्यासे- विक्षिपति। अध- अनन्तरम्। विश्वम्- सर्वम्। शत्रूयन्तम्- विरोधकामम्। जघान- हिंसितवान्॥३॥

Dr. Rangani
WEBOLIM

**उभे चिदिन्द्र रोदसी महित्वा पप्राथ तविषीभिस्तुविष्मः।**

**नि वज्रमिन्द्रो हरिवान्मिमिक्षन्समन्धसा मदेषु वा उवोच॥ ७.०२०.०४**

तुविष्मः- बहुयुक्त। इन्द्र- परमेश्वर। महित्वा- स्वमाहात्म्येन। उभे रोदसी- द्यावापृथिव्यौ। तविषीभिः- स्वशक्तिभिः। आ पप्राथ- आपूरितवानसि। हरिवान्- प्राणाश्ववान्। इन्द्रः। वज्रम्। नि मिमिक्षन्- विरोधिषु प्रापयन्। मदेषु- हर्षेषु निमित्तेषु। अन्धसा- सोमेन रसेन। उवोच- संगच्छते। उच समवाये ॥४॥

**वृषा जजान वृषणं रणाय तमु चिन्नारी नर्यं ससूव।**

**प्र यः सेनानीरध नृभ्यो अस्तीनः सत्वा गवेषणः स धृष्णुः॥ ७.०२०.०५**

वृषा- वर्षक आत्मा। वृषणम्- वर्षकमिन्द्रम्। रणाय- रमणाय। जजान- ससर्ज। तम्। नर्यं- नरहितम्। नारी- अदितिरखण्डप्रकृतिः। ससूव- सुषुवे। यः। सेनानीः- सेनापतिः। इनः- ईश्वरः। सत्वा- बली। गवेषणः- चिद्रश्मिकामः। सः। धृष्णुः- शत्रुधर्षकः। नृभ्यः- यजमानेभ्यः। अस्ति- भवति ॥५॥

**नू चित्स भ्रेषते जनो न रेषन्मनो यो अस्य घोरमाविवासात्।**

**यज्ञैर्य इन्द्रे दधते दुवांसि क्षयत्स राय ऋतपा ऋतेजाः॥ ७.०२०.०६**

यः। अस्य- एतस्येन्द्रस्य। घोरम्- वृत्रबाधकम्। मनः- चित्तम्। आविवासात्- परिचरेत्। सः। नु- न। भ्रेषते- भ्रश्यति। स जनः। न। रेषत्- क्षीयते। यज्ञैः- दानैः पूजाभिः सङ्गतिकरणैः। यः। इन्द्रे- परमेश्वरे। दुवांसि- सेवाः। दधते- धारयति। सः। ऋतपाः- सत्यपालकः। ऋतेजाः- सत्यजः। राये- दानयोग्यसम्पदे। क्षयत्- निवसति ॥६॥

**यदिन्द्र पूर्वो अपराय शिक्षन्नयज्ज्यायान्कनीयसो देष्णम्।**

**अमृत इत्पर्यासीत दूरमा चित्र चित्र्यं भरा रयिं नः॥ ७.०२०.०७**

Dr. Rangaji

WEBOLIM

इन्द्र- परमेश्वर। चित्र-विशिष्ट। पूर्वः। अपराय। शिक्षन्- विद्यां ददाति। ज्यायान्- ज्येष्ठः। कनीयसः- कनिष्ठाय। देष्णम्- देयं यच्छति। अमृत इत्- अमृत एवापरः। दूरम्- दूरेऽपि। पर्यासीत- यत्पूर्वार्जितं लभते। तत्। चित्र्यम्- विचित्रम्। रयिम्- दानयोग्यधनम्। नः- अस्मभ्यम्। भर- यच्छ। पितृपैतामहीं सम्पदं विद्यां वा यच्छेति भावः ॥७॥

**यस्त इन्द्र प्रियो जनो ददाशदसन्निरेके अद्रिवः सखा ते।**
**वयं ते अस्यां सुमतौ चनिष्ठाः स्याम वरूथे अघ्नतो नृपीतौ॥ ७.०२०.०८**

अद्रिवः- वज्रिन्। इन्द्र- परमेश्वर। यः। प्रियः। जनः। ते- तुभ्यम्। ददाशत्- दद्यात्। सः। ते- तव। सखा। निरेके- दाने। असत्- स्यात्। वयम्। अघ्नतः- अहिंसतः। ते- तव। अस्याम्- एतस्याम्। सुमतौ। नृपीतौ- नृपालके। वरूथे- श्रेष्ठे स्थाने। चनिष्ठाः- अतिशयेन अन्नवन्तः। स्याम- भवेम ॥८॥

**एष स्तोमो अचिक्रदद्वृषा त उत स्तामुर्मघवन्नक्रपिष्ट।**
**रायस्कामो जरितारं त आगन्त्वमङ्ग शक्र वस्व आ शको नः॥ ७.०२०.०९**

वृषा- वर्षकः। एषः- अयम्। ते- त्वदीयः। स्तोमः- मन्त्रः। अचिक्रदत्- शब्दमकरोत्। उत- अपि च। मघवन्- इन्द्र। स्तामुः- स्तोता। अक्रपिष्ट- अस्तौत्। रायस्कामः- सम्पदिच्छा। ते- तव। जरितारम्- स्तोतारम्। आगन्- आगच्छति। नः- अस्मभ्यम्। त्वम्। शक्र- शक्तिमन्। वस्वः- सम्पदः। आ शकः- यच्छ ॥९॥

**स न इन्द्र त्वयताया इषे धास्त्मना च ये मघवानो जुनन्ति।**
**वस्वी षु ते जरित्रे अस्तु शक्तिर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ७.०२०.१०**

ये। मघवानः- हव्यवन्तः। त्मना- स्वतः। जुनन्ति- हव्यं प्रेरयन्ति। तान्। नः- अस्मान्। इन्द्र। त्वयतायै- त्वद्दत्तायै। इषे- सदेषणायै। धाः- धारय। जरित्रे- स्तोत्रे। ते- तव। शक्तिः। सु वस्वी- शोभनसम्पत्सम्पन्ना भवतु। यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥१०॥

Dr. Ranganji
WEBOLIM